(Kiskorid B.A.II Hons
08/02/2022 (Contin.)

त्रुटि (error of leniency) जैसी भयानक त्रुटियों अपने-आप नियंत्रित रहती है। क्योंकि शिक्षक को कुछ छात्रों या बालकों को उच्च कोटि, कुछ को निम्न कोटि तथा कुछ को मध्य कोटि (middle rank) की श्रेणी में रखना ही पड़ता है।

(iii) कोटि विधि में एक फायदा यह बताया गया है कि इसमें शिक्षक या प्रेक्षक को प्रत्येक बालक को एक-दूसरे से विभेदित (discrimination) करते हुए श्रेणीकरण (Ranking) करना होता है, अतः उस विधि द्वारा शिक्षक को बालकों के बारे में सापेक्ष अन्तर (relative-difference) का सही-सही ज्ञान हो पाता है और शिक्षक एक वैज्ञानिक एवं दुरुस्त (sound) निष्कर्ष पर पहुँचने में समर्थ हो पाते हैं।

इन गुणों के बावजूद कोटि विधि के कुछ अवगुण (demerits) हैं, जो निम्नांकित है –

i) कुछ शिक्षा मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि कोटि विधि (Ranking method) द्वारा बालकों या शिक्षार्थियों के शीलगुणों की आपसी भिन्नता के अन्तर पता नहीं चलता।

उदाहरणस्वरूप, यदि चार बालक द्वारा किसी बुद्धि परीक्षण (Intelligence test) पर आए प्राप्तांक (score) जैसे 70, 69, 50, 30 को कोटि (Rank) में बदला जाए तो क्रमशः इसके कोटि (Rank) 1, 2, 3 तथा 4 होंगे। लेकिन, यहाँ स्पष्ट है कि कोटि 1 और 2 तथा 3 और 4 में अन्तर मात्र एक-एक का है परन्तु वास्तव में जिस बुद्धि प्राप्तांक को इन कोटियों द्वारा बताया जा रहा है, उनमें आपस में काफी अधिक अन्तर है।